रागो का समय सिद्धान्त

Dr Tapati Mukerji.
Associate Prof. in
Music H.O.D.

हमारे भारतीय संगीत मे प्रत्येक राग को गाने बजाने का एक निश्चित समय माना गया है। संगीत शास्त्रकारो ने अपने अनुभव तथा मनोवैज्ञानिक के आधार पर विभिन्न रागो की गाने-बजाने के समय पृथक-पृथक निश्चित किये है। यह सत्य है कि रागों को उनके समय पर गाने से एक विशेष आनन्द प्राप्त होता है। जैसे प्रातःकाल मे राग भैरव, रात्रि के समय मालकोष; वर्षा ऋतु मे मेघ मल्हार, मियां मल्हार वसन्त ऋतु के राग वसन्त आदि। भारतीय संगीत मे चार निश्चित सिद्धांतो के आधार पर रागों का समय निश्चित किया गया है।

(a) अध्वदर्शक स्वर, (b) पूर्वांग-उत्तरांग
(c) वादी-सम्वादी स्वर (d) रे ध कोमल, रे ध शुद्ध तथा ग नि कोमल।

(a) अध्वदर्शक स्वर से समय निर्धारण –

उत्तर भारतीय संगीत मे रागो का समय सिद्धान्त मे मध्यम (म) स्वर का महत्व अधिक दिया गया है। मध्यम स्वर से रात्रि या दिन मे गाये जाने वाले राग का निर्धारण होता है। इसलिए मध्यम स्वर को अध्वदर्शक स्वर कहा गया है।
सर्व सम्मति से दिन बारह (12) बजे से रात्रि (बारह) 12 बजे तक समय को पूर्वार्ध तथा रात्रि (बारह) 12 बजे से दिन बारह बजे तक उत्त